कलाम

KALAM ACADEMY, SIKAR

3rd Grade Test Series-2025 L-2 [Hindi]   Minor - 01 [ANSWER KEY]   HELD ON : 11/08/2025

Q.	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**	**17**	**18**	**19**	**20**
Ans.	4	3	2	2	2	1	3	4	2	2	1	3	2	1	2	4	4	4	3	2
Q.	**21**	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**27**	**28**	**29**	**30**	**31**	**32**	**33**	**34**	**35**	**36**	**37**	**38**	**39**	**40**
Ans.	3	3	4	1	3	3	2	4	4	1	2	1	2	1	1	1	2	2	4	3
Q.	**41**	**42**	**43**	**44**	**45**	**46**	**47**	**48**	**49**	**50**	**51**	**52**	**53**	**54**	**55**	**56**	**57**	**58**	**59**	**60**
Ans.	1	4	3	4	3	2	4	3	3	3	1	2	1	2	2	1	1	1	4	3
Q.	**61**	**62**	**63**	**64**	**65**	**66**	**67**	**68**	**69**	**70**	**71**	**72**	**73**	**74**	**75**	**76**	**77**	**78**	**79**	**80**
Ans.	2	3	3	2	2	1	2	3	3	2	3	2	2	3	3	4	4	1	1	2
Q.	**81**	**82**	**83**	**84**	**85**	**86**	**87**	**88**	**89**	**90**	**91**	**92**	**93**	**94**	**95**	**96**	**97**	**98**	**99**	**100**
Ans.	3	2	3	4	1	2	4	2	1	2	2	1	4	3	3	4	1	2	4	3
Q.	**101**	**102**	**103**	**104**	**105**	**106**	**107**	**108**	**109**	**110**	**111**	**112**	**113**	**114**	**115**	**116**	**117**	**118**	**119**	**120**
Ans.	3	4	1	3	2	4	4	3	1	4	2	4	4	1	1	2	2	2	2	1
Q.	**121**	**122**	**123**	**124**	**125**	**126**	**127**	**128**	**129**	**130**	**131**	**132**	**133**	**134**	**135**	**136**	**137**	**138**	**139**	**140**
Ans.	1	1	2	1	3	3	1	3	4	2	2	4	3	3	1	3	4	2	1	1
Q.	**141**	**142**	**143**	**144**	**145**	**146**	**147**	**148**	**149**	**150**										
Ans.	1	3	1	4	3	2	2	4	4	3										

Minor-01
L-2 (हिन्दी)
Solution

1. Ans. 4

- राजस्थान में स्थित विभिन्न स्थलाकृत्तियों का उत्तर से दक्षिण की ओर व्यवस्थित क्रम –
  नाली- उत्तरी राजस्थान में गंगानगर व हनुमानगढ़ में घग्घर नदी का क्षेत्र
  धरियन – पश्चिमी राजस्थान में स्थानांतरणशील बालुका स्तूप
  ऊपरमाल- दक्षिणी पूर्वी राजस्थान में स्थित पठारी क्षेत्र
  भोमट- दक्षिणी राजस्थान में डूंगरपुर-उदयपुर का क्षेत्र

2. Ans. 3

- बनास बेसिन अधिकांशत: टोंक जिले में विस्तरित है।
- अरावली पर्वत श्रेणी तथा चम्बल बेसिन के बीच का भाग बनास-बाणगंगा बेसिन के नाम से जाना जाता है।
- इस मैदान का सबसे उत्तरी भाग जिसमें जयपुर से भरतपुर तक का क्षेत्र शामिल है, वह बाणगंगा बेसिन के अन्तर्गत आता है।
- बनास बेसिन को दो उपभागों में बाँटा गया है- **मालपुरा करौली का मैदान तथा मेवाड़ का मैदान**

3. Ans. 2

- अरावली विश्व की प्राचीनतम वलित पर्वत श्रेणी है।
- उत्तर-पूर्वी मैदान गंगा – यमुना नदीयों द्वारा निर्मित मैदान का भाग है।
- पश्चिमी बालुका मैदान टेथिस सागर का अवशेष है।
- दक्षिणी पूर्वी पठार गौंडवाना लैण्ड का विस्तारित भाग है।

4. Ans. 2

- मुकुन्दरा पर्वत श्रेणी का सर्वोच्च शिखर चन्दवाड़ा क्षेत्र में स्थित है, जो 517 मीटर ऊँचा है।
- शाहबाद क्षेत्र – यह दक्षिणी पूर्वी पठार का उपभाग है।
- सतूर क्षेत्र – यह बूँदी की पहाड़ियों का सर्वोच्च शिखर है।

5. Ans. 2

- झालावाड़ पठार का उत्तरी-पश्चिमी भाग 'डग-गंगधार की उच्च भूमि' कहलाता है। यह झालावाड़ जिलें में स्थित है
- यह मालवा पठार का उत्तरी भाग है।
- यह पठार संभवत: 450 मीटर ऊँचाई का है।
- यह पठार सर्वत्र धरालीय एकरूपता नहीं रखता है।

6. Ans. 1

- **तारा स्तूप**- अनेक भुजाओं वाले तारे जैसी आकृति के स्तूप। उदाहरण- **मोहनगढ़ क्षेत्र (जैसलमेर-पोकरण) में एवं सूरतगढ़ क्षेत्र (गंगानगर) में।**

7. Ans. 3

- देलवाड़ा (सिरोही) – 1442 मीटर
- ऋषिकेश (सिरोही) – 1017 मीटर
- कमलनाथ (उदयपुर) – 1001 मीटर

8. Ans. 4

- **बनास बेसिन को दो उपभागों में बाँटा गया है-**
  (a) मालपुरा करौली का मैदान- यह बनास बेसिन का उत्तरी भाग है, जिसमें टोंक, सवाईमाधोपुर, करौली, दौसा आदि जिलों का क्षेत्र आता है। हैरोन महोदय ने इस क्षेत्र की पहचान तृतीय पेनिप्लेन के रूप में की।
  (b) मेवाड़ का मैदान- यह बनास बेसिन का दक्षिणी भाग है जिसमें राजसमन्द, चित्तौड़गढ़ व भीलवाड़ा जिलों का क्षेत्र आता है।
- मेवाड़ के मैदान में देवगढ़ के निकट अरावली के पूर्वी भागों में **टीलेनुमा पीडमान्ट मैदान** है।

9. Ans. 2

- उत्तरी अरावली से संबंधित शिखर समूह सिरावास (अलवर) बबाई (झुंझुनूं) है।
- लीलागढ़ व काटड़ा (दक्षिणी अरावली)- उदयपुर में
- सायरा व कमलनाथ (दक्षिणी अरावली)- उदयपुर में
- धोनिया-डूँगर व ऋषिकेश (दक्षिणी अरावली)- राजसमंद-उदयपुर में

10. Ans. 2

- **मेवाड़ का मैदान**- यह बनास बेसिन का दक्षिणी भाग है जिसमें राजसमन्द, चित्तौड़गढ़ व भीलवाड़ा जिलों का क्षेत्र आता है।
- यह प्रदेश भू-आकृतिक रूप से विविधता युक्त है।
- इस प्रदेश को प्रतापगढ़-बाँसवाड़ा में छप्पन का मैदान नाम से जाना जाता है।
- इस मैदान में प्रवाहित होने वाली प्रमुख नदियाँ बनास, बाणगंगा, माही, सोम, जाखम व चम्बल आदि हैं।

कलाम ACADEMY

11. Ans. 1

- 'बूँदी पर्वत श्रेणी' का सर्वोच्च शिखर है
- इनका सर्वोच्च शिखर सतूर 353 मीटर ऊँचा है, जो बूँदी नगर से 13 किमी. पश्चिम में है।

12. Ans. 3

- ढांड – मरुस्थलीय प्रदेश में अस्थायी झील
- इन्सेलबर्ग – अवशिष्ट पहाड़ियाँ
- रेग – **मिश्रित मरुस्थल**
- नेबखा – झाड़ियों के सहारे निर्मित बालुका-स्तूप

13. Ans. 2

- 'मेवल' है-
- डूँगरपुर व बाँसवाड़ा के मध्य पर्वतीय क्षेत्र

14. Ans. 1

- **महान सीमा भ्रंश (GBT)**– अरावली तथा दक्षिणी-पूर्वी पठार के मध्य। हाड़ौती पठारी प्रदेश के उत्तरी-पश्चिमी सीमान्त पर स्थित भ्रंश। यह भ्रंश **धौलपुर, सवाईमाधोपुर, बूँदी, चित्तौड़गढ़ (बेंगू), उत्तरी कोटा** आदि जिलों में फैला हुआ है।

15. Ans. 2

- राजस्थान में स्थित पठारों के पूर्व से पश्चिम की ओर व्यवस्थित क्रम –
- **हाड़ौती, ऊपरमाल, लसाड़िया, भोराट, आबू**

16. Ans. 4

- **हमादा मरुस्थलीय** प्रदेश की शैलें जुरासिक, क्रिटेशियस व इओसीन भूगर्भिक काल की हैं।

17. Ans. 4

- देवगढ़ का पीडमाण्ट मैदान बनास बाणगंगा बेसिन के उपभाग मेवाड़ के मैदान का हिस्सा है।

18. Ans. 4

- **अवरोधी बालूका स्तूप**– किसी अवरोध के कारण (पेड़, झाड़ी, पर्वत, भवन) उत्पन्न जमाव से निर्मित। इन बालूका स्तूपों को जीवावशेष बालूक स्तूप माना जाता है। जैसे- पुष्कर, नाग पहाड़, बूढ़ा पुष्कर, बिचून पहाड़, जोबनेर एवं सीकर की पहाड़ियों में मिलते हैं।

19. Ans. 3

- **विन्ध्यन कगार**– ये **चूना पत्थर व बलुआ पत्थर** से निर्मित हैं, जिनका मुख बनास व चम्बल के बीच दक्षिण-पूर्व व पूर्व की ओर है।

20. Ans. 2

- डोरा पर्वत (869 मीटर) जालौर की पहाड़ियों के अन्तर्गत आता है।
- लूनी बेसिन-नेहड़- जालौर जिले के साँचौर में स्थित।
- शेखावाटी प्रदेश-जोहड़ जल संरक्षण तकनीक।
- घग्घर मैदान-नाली (गंगानगर, हनुमानगढ़)

21. Ans. 3

- डोरा पर्वत - जालौर
- कमली घाट - राजसमंद
- हर्ष की पहाड़ियाँ - सीकर
- हाथी नाल - उदयपुर

22. Ans. 3

- अरावली विश्व की **प्राचीनतम वलित पर्वत श्रेणी** है, जिसमें **प्री कैम्ब्रियन** (प्री पेल्योजोइक) काल की चट्टानें पाई जाती हैं, मुख्य श्रेणी कठोर **क्वार्टजाइट** की बनी हुई हैं जो अपरदन के लिए काफी कठोर हैं।

23. Ans. 4

- **काली मिट्टी का निर्माण लावा के दरारी उद्गार (दक्कन ट्रैप)** से हुआ है, इसे मध्यम काली मृदा भी कहते हैं।
- **विस्तार क्षेत्र**– राजस्थान के **दक्षिणी-पूर्वी पठारी भाग** (कोटा, बूँदी, बारां व झालावाड़) में मिलती है।

24. Ans. 1

- **विस्तार**– राजसमन्द, पाली, उदयपुर, सलूम्बर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़, सिरोही, झालावाड़, जयपुर, दौसा, अलवर, सवाईमाधोपुर।

25. Ans. 3

- रेवेरिना – गंगानगर
- जिप्सीफेरस – बीकानेर
- **सी-रोजेम – श्रीगंगानगर**
- स्लेटी भूरी – जालौर, पाली

कलाम ACADEMY

26. Ans. 3

- कैल्सी ब्राउन मृदा – जैसलमेर, बीकानेर
- नवीन भूरी मृदा – भीलवाड़ा, ब्यावर एवं अजमेर
- **पर्वतीय मृदा - उदयपुर, सलुम्बर एवं कोटा**
- लाल दुमट – डुंगरपुर, बांसवाड़ा

27. Ans. 2

मिट्टी के प्रकार		जलवायु प्रदेश
♦ एरिडोसोल्स	-	शुष्क एवं अर्द्ध-शुष्क
♦ इनसेप्टीसोल्स	-	अर्द्ध-शुष्क एवं आर्द्र
♦ अल्फीसोल्स	-	उप-आर्द्र एवं आर्द्र
♦ वर्टीसोल्स	-	आर्द्र एवं अति-आर्द्र

28. Ans. 4

मृदा	मृदा उपसमूह
एरिडोसोल	• कैम्बो ऑरथिड्स • केल्सी ऑरथिड्स • पेलि ऑरथिड्स • सेल ऑरथिड्स
एंटीसॉल	• सामेन्ट्स- टोरीसामेन्ट्स • फ्लूवेन्ट्स- टोरीफ्लूवेन्ट्स • उस्टीफ्लूवेन्ट्स
अल्फीसॉल	• हेप्लुस्तालफस
इन्सेप्टीसॉल	• उस्टोक्रेप्ट्स
वर्टीसॉल	• उस्टर्टस (पेल्युस्टर्टस, क्रोमस्टर्टस)

29. Ans. 4

- लवणीयता, सेम/जलाक्रान्ता की समस्या, क्षारीयता, मृदा अवकर्षण, मृदा अपरदन

30. Ans. 1

- **मरूस्थली मिट्टी (रेतीली मृदा)** पश्चिमी राजस्थान में शुष्क जलवायु वाले भागों में पाई जाती है।
- इस मिट्टी का निर्माण भौतिक अपक्षय व अधिक तापान्तर से हुआ है।
- यह मृदा राजस्थान में सर्वाधिक क्षेत्र पर विस्तृत है।
- यह मिट्टी कम उपजाऊ व लवणीय होती है।
- इस मृदा pH मान उच्च होता है तथा इसमें जैविक पदार्थों की कमी पाई जाती है।
- यह मिट्टी पवनों द्वारा स्थानान्तरित होती रहती है।
- इस मिट्टी के कणों का आकार अत्यधिक बड़ा होता है तथा इसकी जल धारण क्षमता कम व जल अवशोषण क्षमता अधिक होती है।

31. Ans. 2

- काली मृदा को रेगुर मृदा/स्वत: जुताई वाली मृदा के नाम से भी जाना जाता है। इसमें सूखने पर दरारे पड़ जाती हैं।

32. Ans. 1

- एरिडोसोल मृदा राज्य में सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र पर फैली हुई है।
- एरिडोसोल मृदा की पश्चिमी राजस्थान में प्रधानता है।
- एंटीसॉल राजस्थान में दूसरी सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई मृदा है।

33. Ans. 2

भूरी रेतीली कच्छारी मिट्टी

- यह मिट्टी राजस्थान के अलवर, भरतपुर के उत्तरी भाग और गंगानगर जिले के मध्य भाग में पाई जाती है।
- इस मिट्टी में बाजारा, ज्वार, तिल, ईसबगोल, गेहूँ, सरसों, जौ आदि फसलों का उत्पादन किया जाता है।
- इस मिट्टी का रंग लाल व भूरा होता है।
- इस मिट्टी में चूना, फॉस्फोरस व ह्यूमस की कमी होती है।

34. Ans. 1

- लाल-पीली मृदा में चीका व दोमट दोनों प्रकार की मृदा मिलती है।
- **विस्तार क्षेत्र-** सवाईमाधोपुर, सिरोही, राजसमन्द, पाली, अजमेर, उदयपुर व भीलवाड़ा के पश्चिमी भाग में पाई जाती है।

35. Ans. 1

- रेतीली और बलुई दोमट मृदा, राजस्थान के कितने भू-भाग पर विस्तृत लगभग दो तिहाई भाग पर है।

36. (1)

व्याख्या :

आत्मानुभूति प्रेरक (Self-Actualisation Motive) :

आत्मानुभूति/स्व-यथार्थीकरण आवश्यकताओं का उच्चतम स्तर है जो व्यक्ति के उच्चतम लक्ष्यों की प्राप्ति और वास्तविक पहचान से संबंधित है। मैस्लो के शब्दों में एक व्यक्ति जो हो सकता है उसे वही होना चाहिए। यह जीवन के वास्तविक उद्देश्य की प्राप्ति है जो सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, आध्यात्मिक किसी भी रूप में हो सकती है।

37. (2)

व्याख्या :

चालना/अंतर्नोद (Drive) :

अंतर्नोद/प्रणोद तनाव अथवा क्रियाशीलता की अवस्था को कहा जाता है जो किसी आवश्यकता द्वारा उत्पन्न होता है। अर्थात् आवश्यकता अंतर्नोद को जन्म देती है। प्रेरक में दो चीजों का समावेश होता है- बल या अंतर्नोद और व्यवहार की लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होने की प्रवृत्ति।

जब प्रणोद के फलस्वरूप व्यक्ति का व्यवहार लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अग्रसर होता है तो ऐसे व्यवहार को प्रेरित व्यवहार कहते हैं।

38. (2)

व्याख्या :

- प्रेरणा छात्र की रूचि को बढ़ाती है किन्तु अवधान निर्माण में सहयोगी है।

39. (4)

व्याख्या :

प्रत्याशा सिद्धांत (Expectancy Theory)-

- इस सिद्धांत का प्रतिपादन सन् 1964 में येल प्रबंधन विश्वविद्यालय के विक्टर व्रूम ने किया।
- इस सिद्धांत के अनुसार किसी अभिप्रेरित व्यवहार की तीव्रता इस बात पर निर्भर करती है कि उसे परिणामस्वरूप क्या प्राप्त होगा(outcome reward)।

40. (3)

व्याख्या :

- **वुडवर्थ :** निष्पत्ति = योग्यता + अभिप्रेरणा

41. (1)

व्याख्या :

स्किनरः-

- शिक्षा-मनोविज्ञान का आरम्भ अरस्तू के समय से माना जा सकता है पर शिक्षा-मनोविज्ञान के विज्ञान की उत्पत्ति यूरोप में पेस्टॉलॉजी, हरबार्ट और फ्रॉबेल के कार्यो से हुई, जिन्होंने शिक्षा का मनोवैज्ञानिक बनाने का प्रयास किया।

42. (4)

व्याख्या :

- **सैन्ट्रोक** के अनुसार, ''शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शैक्षिक परिस्थितियों में शिक्षण एवं अधिगम के बोध में विभिन्नता दिखलाता है।''

43. (3)

व्याख्या :

व्यवहारवाद (Behaviourism)-

- प्रवर्तक - जे.बी. वॉटसन
- मनोविज्ञान की विषयवस्तु प्रेक्षणीय व्यवहार का अध्ययन हैं।
- मनोविज्ञान वस्तुनिष्ठ व प्रयोगात्मक विज्ञान हैं।
- प्रेक्षण, अनुबंधन, परीक्षण, शाब्दिक रिपोर्ट

44. (4)

व्याख्या :

- शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की अनुप्रयुक्त शाखा हैं।
- यह शैक्षिक समस्याओं का हल मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं विधियों का प्रयोग करके करता हैं।
- यह एक वस्तुनिष्ठ एवं प्रयोगात्मक विज्ञान हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान एक सामाजिक विज्ञान हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान एक नियामक विज्ञान नहीं हैं।

45. (3)

व्याख्या :

आंतरिक अभिप्रेरण	बाह्य अभिप्रेरण
1. इसका स्रोत मनुष्य के भीतर होता है।	1. इसका स्रोत कोई बाहरी तत्व होता है।
2. ऐसे अभिप्रेरण को प्रत्यक्ष रूप से बाहर से देखा नहीं जा सकता।	2. ऐसे अभिप्रेरण को बाहर से देखा जा सकता है।
3. यह व्यक्ति को कार्य केन्द्रित रखता है।	3. यह व्यक्ति को लक्ष्य केन्द्रित रखता है।
4. उपलब्धि की आवश्यकता, संबंधन की आवश्यकता, आकांक्षा स्तर आंतरिक अभिप्रेरण के कुछ उदाहरण हैं।	4. पुरस्कार, दण्ड, धन, दोषारोपण, प्रतिद्वन्द्विता, परिणाम का ज्ञान, प्रशंसा आदि बाह्य अभिप्रेरण के उदाहरण है।

46. **(2)**

व्याख्या :

लक्षण –

(i) भाषायी विकास में देरी

(ii) नये शब्दों को सीखने में कठिनाई

(iii) ब्लैकबोर्ड से नोटबुक में कॉपी करने में कठिनाई

(iv) इसका असर बालक के पढ़ने लिखने और स्पैलिंग बोलने की क्षमता पर भी पड़ता है।

47. **(4)**

व्याख्या :

डिसग्राफिया :

यह बालक की लेखन संबंधित निर्योग्यता है जिसमें उसे लिखने मे कठिनाई होती है। (Writing Difficulty)

डिसकैल्कुलिया :

वह अधिगम निर्योग्यता जहाँ बालक को गणित को समझने में कठिनाई हो। (Mathematics/Calculation Difficulty)

डिसप्रेक्सिया :

यह एक ऐसी निर्योग्यता है जहाँ बालक के माँस पेशियों के बीच में समन्वय का अभाव हो।

डिसलेक्सिया :

यह एक तरह की अधिगम निर्योग्यता है जिसके अंतर्गत बालक को पढ़ने में कठिनाई होती है। (Reading Difficulty)

48. **(3)**

49. **(3)**

व्याख्या :

- वकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम 2016 (RPwD Act 2016) के अनुसार, Learning Disability को **मान्यता प्राप्त विकलांगता** माना गया है।

50. **(3)**

व्याख्या :

- डिस्लेक्सिक बच्चों के लिए सबसे उपयुक्त शिक्षण विधि **श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री और multisensory technique** का प्रयोग होती है।

51. **(1)**

व्याख्या :

प्रभाविता का नियम (Law of Dominance):

- इस नियम के अनुसार माता-पिता में जो गुण प्रभावी होगा वह अगली पीढ़ी में स्थानांतरित होगा।

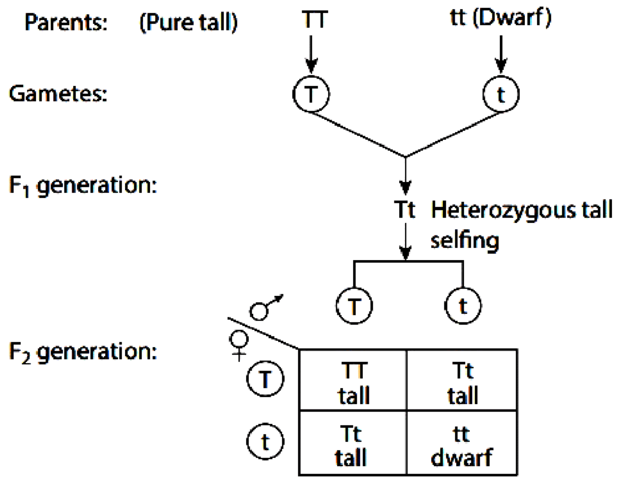

52. **(2)**

व्याख्या :

पृथक्करण का नियम (Law of Segregation):

- इस नियम के अनुसार सुप्त गुण अपना प्रभाव नहीं खोते। हो सकता है कि आगे की पीढ़ियों में ये गुण प्रभावी हो जाये तो स्वाभाविक है कि वे गुण नजर आने लग जाये।

53. **(1)**

व्याख्या :

- **जेम्स ड्रेवर :** माता-पिता की शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं का सन्तानों में हस्तांतरण होना वंशानुक्रम है।

54. **(2)**

व्याख्या :

विभिन्नता का नियम (Law of Variation):

- इस नियम के अनुसार बालक अपने माता-पिता के बिल्कुल समान न होकर कुछ अलग होता है।
- इस प्रकार एक माता-पिता के बालक दूसरे से समानता रखते हुए भी बुद्धि, रंग और स्वभाव में एक-दूसरे से भिन्न होते हैं।
- भिन्नता के मुख्य कारण उत्परिवर्तन (Mutations) तथा प्राकृतिक चयन (Natural Selection) होते हैं, जिनके द्वारा वंशक्रमीय विशेषताओं का उन्नयन होता है।

55. **(2)**

व्याख्या :

- मानव जीवन का आरंभ केवल एक कोष युग्मनज (Zygote) से घटित होता है।
- कोश में केन्द्र व कोशारस (Cytoplasm) पाये जाते हैं। केन्द्र में वंशसूत्र होते हैं।
- मादा की जनक कोशिका अण्डाणु (Ovum) जब पिता की जनक कोशिका शुक्राणु (Sperm) से निषेचित होने के परिणामस्वरूप युग्मनज (Zygote) का निर्माण होता है।
- यह युग्मनज केन्द्रक युक्त एक छोटी कोशिका होती है, जिसके मध्य में केन्द्रक होता है, जिसमें गुणसूत्र होते है।
- संयुक्त कोश/युग्मनज में वंशसूत्र के 23 जोड़े होते हैं।
- जनन कोशिका में 23 वंशसूत्र ही होते हैं। पुरुष के शुक्राणु व स्त्री के अण्डाणु मिलकर सन्तान में 23 जोड़े वंशसूत्र का निर्माण करते हैं।
- 22 जोड़े पुरुष व स्त्री में समान होते हैं किन्तु 23वाँ जोड़ा अलग होता है। यही लिंग का निर्धारण करता है।

56. **(1)**

व्याख्या :

शिक्षा मनोवैज्ञानिक अर्थ एवं प्रकृति-

- यह शैक्षिक समस्याओं का हल मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं विधियों का प्रयोग करके करता हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। इस विषय का प्रयोग व्यक्ति के व्यक्तिगत एवं सामूहिक व्यवहार के अध्ययन और विश्लेषण करने में किया जाता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान विभिन्न मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं का शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान संकलित किये गये ज्ञान को सैद्धान्तिक स्वरूप प्रदान करता हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान ने एक सिद्धान्त का विकास किया है, जिससे ज्ञान की खोज की जाती है, परिकल्पनाओं का परीक्षण होता है तथा सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता हैं।
- यह पद्धति अपने आप उत्पन्न होने वाली शैक्षिक समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने में सहायक होती हैं।
- ये सूचनाएँ, ज्ञान, सिद्धान्त और पद्धति सभी मिलकर शिक्षा-मनोविज्ञान का विषय बनते हैं और शैक्षिक सिद्धान्त तथा शैक्षिक व्यवहार को आधार प्रदान करते हैं।

57. **(1)**

व्याख्या :

स्वलीनता (Autism) :

- यह एक विकासात्मक विकार है जो व्यक्ति के संप्रेषण कौशल पर असर डालते हैं कि व्यक्ति समाज में कैसे पेश आता है। (सामाजिक व्यवहार व संपर्क) यह व्यक्ति के संज्ञानात्मक, संवेगात्मक, सामाजिक, शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

लक्षण :

(i) दोहराव युक्त व्यवहार (Repetative Behaviour)
(ii) बातचीत में असमर्थता
(iii) सीमित शौक
(iv) संप्रेषण की कमजोरी
(v) सामाजिकता का अभाव
(vi) अत्यधिक प्रकाश एवं ध्वनि के प्रति संवेदनशील

58. **(1)**

व्याख्या :

- **डेविड मैक्लीलैंड** ने इसकी अभिव्यक्ति में चार सामान्य तरीके बताए हैं –
  1. बाहरी स्रोत का उपयोग करना
  2. भीतरी स्रोत का निर्माण करना
  3. व्यक्तिगत स्तर पर कार्य करना
  4. संगठन के सदस्य के रूप में दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए कार्य करना।
- एक व्यक्ति शक्ति या सामर्थ्य का बोध प्राप्त करने के लिए खेल सितारों की कहानी पढ़ता हैं, अथवा किसी लोकप्रिय व्यक्ति के साथ संलग्न होता है। शक्ति अभिप्रेरक अभिव्यक्ति हेतु मैक्लीलैण्ड के अनुसार यह बाहरी स्रोत की विधि है।

59. **(4)**

व्याख्या :

- अध्यापक को शिक्षण विधियों तथा सामग्रियों के उचित चयन का ज्ञान शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा होता है जिससे वह शिक्षण की उचित व्यवस्था कर सकें।
- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापकों का, अधिगम की क्रिया के सम्बन्ध में मार्गदर्शन करता है।

- बालक में होने वाले व्यावहारिक परिवर्तन का मूल्यांकन करने में शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को सहायता प्रदान करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को बालक की प्रकृति, स्वभाव तथा आवश्यकताओं आदि का ज्ञान प्रदान करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को शिक्षा के उद्देश्यों को समझने में सहायता करता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को वह ज्ञान प्रदान करता है, जिससे वह बालक की समस्याओं का पता लगा सके और उसका हल भी बता सके।

60. **(3)**

व्याख्या :

- कोई भी अभिप्रेरक पूर्णत: जैविक अथवा मनो-सामाजिक नहीं होता। यह व्यक्ति में विभिन्न मिश्रणों में उद्दीप्त होते हैं।
- मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अभिप्रेरकों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - जैविक एवं मनो-सामाजिक।

61. **Ans. 2**

- अरावली ग्रीन वाल परियोजना देश के चार राज्यों के 29 जिलों में 700 किमी. लम्बाई में विस्तृत (सर्वाधिक 81 प्रतिशत विस्तार राजस्थान में है) अरावली के आस-पास के 5 किमी. बफर क्षेत्र में वनों से पुन: भरने हेतु चलाई जा रही है।
- इस परियोजना का विस्तार राजस्थान के 19 जिलों (उदयपुर, सिरोही, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, झुन्झुनूं, अलवर, जयपुर, अजमेर, पाली, नागौर, सीकर, दौसा, भरतपुर, करौली, सवाई माधोपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा, राजसमंद) में है। (सर्वाधिक विस्तार उदयपुर तथा सबसे कम विस्तार भरतपुर में)

62. **Ans. 3**

- 4 जून, 2025 को राजस्थान के दो स्थलों **मेनार** व **खींचन** को अन्तरराष्ट्रीय रामसर साइट्स की सूची में सम्मिलित किया गया।
- **मेनार:-**

◆ मेनार व खेरोदा, उदयपुर (राजस्थान) स्थित एक मीठे पानी का मानसूनी वेटलैण्ड कॉम्पलेक्स है जो तीन तालाबों ब्रह्मा तालाब, ढांड तालाब व खोरोदा तालाब तथा दो अन्य तालाबों को जोड़ने वाली कृषि भूमि से मिलकर बना है।

◆ इस साइट का कुल क्षेत्रफल 463.4 हैक्टयेर है। (रामसर साइट क्रमांक = 2567)

◆ **मेनार को 'बर्ड विलेज' के नाम से भी जाना जाता है।** यहाँ मानसूनी मौसम के दौरान कृषि भूमि में पानी भर जाता है, जिसके कारण यहाँ लगभग 110 प्रजातियों के जल पक्षियों का आगमन होता है। (67 प्रवासी प्रजाति)

63. **Ans. 3**

- युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय व खेलो इण्डिया द्वारा 'खेलो इण्डिया युनिवर्सिटी गेम्स' के **5वें** संस्करण की मेजबानी राजस्थान को सौंपी गई है।
- इन खेलों की मेजबानी राजस्थान को पहली बार सौंपी गई हैं।
- ये खेल नवम्बर-2025 में पूर्णिमा विश्वविद्यालय (मेजबान) और राजस्थान विश्वविद्यालय (सह-मेजबान) द्वारा संयुक्त रूप से जयपुर में आयोजित किए जायेंगे।

64. **Ans. 2**

- राजस्थानी भाषा के लिए **वर्ष 2025** का **बाल साहित्य पुरस्कार भोगीलाल पाटीदार** को उनकी पुस्तक ''पखेरूवन नी पीरा (नाटक)'' के लिए प्रदान किया गया।

पुरस्कार:- विशेष बॉक्स में ताम्र पत्रिका व 50 हजार रूपये की राशि

- वर्ष 2025 के राजस्थानी भाषा के बाल साहित्य पुरस्कार के चयन हेतु गठित जूरी में निम्न तीन सदस्य थे-

(1) प्रो. कल्याण सिंह शेखावत
(2) डॉ. नवज्योत भनोट
(3) श्रीमति दमयन्ती जादावत

65. **Ans. 2**

- 28 मई से 6 जून तक चांगवोन (दक्षिण कोरिया) में आयोजित वर्ल्ड शूटिंग पैरा स्पोर्ट्स (WSPS) वर्ल्ड कप-2025 में **रूद्रांश खण्डेलवाल** ने P1-मेन्स 10 मीटर एयर पिस्टल (SH1) की **व्यक्तिगत स्पर्द्धा** में मनीष नरवाल को हराकर स्वर्ण पदक जीता। इस हेतु इनका **स्कोर 236.3** अंक रहा।

66. **Ans. 1**

- केन्द्र सरकार ने गजट नॉटिफिकेशन जारी किया है जिसके तहत पान मैथी (नागौरी पान मैथी) को जून-2025 में स्पाइसेस बोर्ड भारत (भारतीय मसाला बोर्ड) ने आधिकारिक रूप से 53वें मसाले के रूप में अधिसूचित किया है।

67. **Ans. 2**

- ♦ ICAR के कृषि एप्लीकेशन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के अन्तर्गत 66 कृषि विज्ञान केन्द्र है जिनमें 1 दिल्ली में, 18 हरियाणा में तथा 47 राजस्थान में है। ये विभिन्न संस्थाओं के प्रशासनिक नियंत्रण में है जिनमें से कुछ NGO के नियंत्रण में है जैसे-
- ♦ संगरिया हनुमानगढ़ - ग्रामोत्थान विद्यापीठ
- ♦ सरदारशहर, चुरू - गांधी विद्या मंदिर
- ♦ बड़गाँव, उदयपुर - विद्याभवन सोसाइटी
- ♦ वनस्थली विद्यापीठ, टोंक - वनस्थली विद्यापीठ

68. **Ans. 3**

- ♦ राज्य में 9 पशुधन अनुसंधान स्टेशन है जो कि निम्न है-
- ♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, नोहर (हनुमानगढ़)
- ♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, बीछवाल (बीकानेर)
- ♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, बीकानेर
- ♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, कोडमदेसर (बीकानेर)
- ♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, चाँदन (जैसलमेर)
- ♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, वल्लभनगर (उदयपुर)
- ♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)
- ♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, डग (झालावाड़)
- ♦ पशुधन अनुसंधान स्टेशन, सरमथुरा (धौलपुर)

नोट- केशवाना, जालौर में कृषि अनुसंधान स्टेशन है।

69. **Ans. 3**

♦ राज्य में स्थित कृषि अनुसंधान स्टेशन व उनसे संबंधित कृषि जलवायु प्रदेश निम्न है-

अनुसंधान स्टेशन	**संबंधित कृषि जलवायु प्रदेश**
• मंडोर (जोधपुर)	1A
• गंगानगर	IB
• बीकानेर	1C
• फतेहपुर (सीकर)	IIA
• केशवाना (जालौर)	IIB
• दुर्गापुरा (जयपुर)	IIIA
• नवगाँव (अलवर)	IIIB
• उदयपुर	IVA
• उम्मेदगंज, कोटा	V

इस प्रकार नवगाँव, अलवर का कृषि अनुसंधान स्टेशन IIIB कृषि जलवायु प्रदेश से संबंधित है।

70. **Ans. 2**

♦ **वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (CSIR)** की एक घटक प्रयोगशाला सीरी, पिलानी की स्थापना वर्ष 1950 में हुई जब CSIR के प्रणेता डॉ. शांति स्वरूप भटनागर ने इलेक्ट्रॉनिक्स अनुसंधान को समर्पित अनुसंधान और विकास संस्थान की स्थापना हेतु वित्तीय सहायता के लिए जी.डी. बिड़ला से संपर्क किया।

♦ **21 सितंबर 1953** में जवाहरलाल नेहरू द्वारा पिलानी (झुन्झुनूँ) में इसकी आधारशिला रखी।

71. **Ans. 3**

♦ शुष्क क्षेत्र में बागवानी फसलों की क्षमता को साकार करने और लोगों के लिए पोषण और आय सुरक्षा को प्राप्त करने की आवश्यकता

को दृष्टिगत रखते हुए **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्** के कृषि अनुसंधान और शिक्षा पर कार्य समूह की सिफारिश पर भारतीय योजना आयोग के अनुमोदन के बाद सातवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान राष्ट्रीय शुष्क बागवानी अनुसंधान केन्द्र (NRCAH) की स्थापना की गई थी।

♦ **27 सितंबर** 2000 से इसे संस्थान का दर्जा दिया गया और इसका नाम केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर रखा गया।

72. Ans. 2

- **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्** के द्वारा केन्द्रीय भेड़ और ऊन अनुसंधान संस्थान की स्थापना **1962 में मालपुरा (टोंक)** में की गई जो कि अब अविकानगर के नाम से लोकप्रिय है।

73. Ans. 2

♦ केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का एक घटक है जोकि जोधपुर में स्थित है।

♦ इस संस्थान की स्थापना 1952 में रेत की टीलों के स्थिरीकरण और आश्रय पट्टियों की स्थापना के माध्यम से वायु अपरदन के खतरों को नियंत्रित करने के लिए अनुसंधान कार्य हेतु **मरुस्थलीय वनरोपण अनुसंधान केन्द्र (DARS)** के रूप में हुई।

♦ 1966 में इस संस्थान को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अधीन कर दिया गया।

♦ यह देश का एकमात्र ऐसा संस्थान है जिसे शुष्क क्षेत्र पारिस्थितिकी तंत्र के मुद्दों पर विशेष रूप से अनुसंधान करने का अधिकार है।

♦ इस प्रकार प्रश्न में असत्य कथन केवल B है क्योंकि केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान की **1952** में मरूस्थलीय वनरोपण अनुसंधान केन्द्र के रूप में स्थापना की गई।

74. Ans. 3

♦ ICAR के अधीन राजस्थान में 3 अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएँ संचालित है जो निम्नानुसार है–

♦ अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनाएँ–

(i) मोती बाजरा पर जोधपुर में

(ii) सरसों व राई पर भरतपुर में

(iii) शुष्क क्षेत्र फलों पर बीकानेर में

75. Ans. 3

♦ केन्द्रीय कृषि फार्म जैतसर, श्रीगंगानगर की स्थापना 1962 में कनाड़ा के सहयोग से की गई। जबकि केन्द्रीय राज्य फार्म/ केन्द्रीय कृषि फार्म, सुरतगढ़ की स्थापना 1956 में रूस के सहयोग से की गई जो कि एशिया का सबसे बड़ा कृषि फार्म है।

76. Ans. 4

♦ चौपासनी जोधपुर में राजस्थानी शोध संस्थान है जिसकी स्थापना 1955 में हुई तथा–

♦ सामाजिक कार्य शोध केन्द्र – तिलोनिया, अजमेर

♦ रूपायन शोध संस्थान – बोरून्दा, जोधपुर

♦ हस्तशिल्प डिजाइन विकास एवं शोध केन्द्र – जयपुर में है।

77. Ans. 4

♦ केन्द्रीय पशुधन/मवेशी प्रजनन फार्म, सुरतगढ़, श्रीगंगानगर की स्थापना 1967 में हुई जो कि थारपारकर नस्ल हेतु प्रसिद्ध है।

♦ जबकि केन्द्रीय झुंड पंजीकरण युनिट, अजमेर गिर व मुर्रा नस्ल हेतु प्रसिद्ध है।

78. Ans. 1

♦ यांत्रिक कृषि फार्म, कोटा की स्थापना 6 जून, 1978 को हुई।

79. Ans. 1

प्रश्न में अनुसंधान केन्द्र व संबंधित स्थानों की दो सूचियों का मिलान करवाया गया है जो निम्नानुसार है–

♦ शुष्क वन अनुसंधान केन्द्र – जोधपुर

♦ आयुर्वेद केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान – जयपुर

♦ राज्य भेड रोग अनुसंधान प्रयोगशाला – जोधपुर

♦ सिरेमिक विद्युत अनुसंधान एवं विकास केन्द्र – बीकानेर

इस प्रकार प्रश्न में दिए गए स्थानों में से जोधपुर में 2 संस्थान थे जबकि चौथे विकल्प टोंक में प्रश्न में दिया गया कोई भी संस्थान नहीं है। टोंक में निम्न संस्थान है–

1. केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर
2. पश्चिमी क्षेत्रीय बकरी अनुसंधान केन्द्र, अविकानगर
3. मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी फारसी शोध संस्थान
4. भारतीय घास भूमि एवं चारा अनुसंधान संस्थान झाँसी का पश्चिमी क्षेत्र अनुसंधान केन्द्र अविकानगर

कलाम ACADEMY

80. Ans. 2

♦ राजस्थान का राज्य खेल बास्केटबॉल है जिसे 1948 में राज्य खेल का दर्जा प्राप्त हुआ।

81. Ans. 3

♦ प्रश्न में राज्य प्रतीक तथा उनको अधिसूचित करने की दिनाँक की दो सूचियों का मिलान करवाया गया है जिनका सही मिलान निम्नानुसार है–

(A) पशु (पशुधन श्रेणी)	– ऊँट	– 19 सितंबर, 2014
(B) वृक्ष	– खेजडी	– 31 अक्टूबर, 1983
(C) फूल	– रोहिड़ा का फूल	– 31 अक्टूबर, 1983
(D) पशु (वन्यजीव श्रेणी)	– चिंकारा	– 12 दिसंबर, 1983

इस प्रकार राज्य वृक्ष व राज्य फूल को अधिसूचित करने की दिनाँक समान है जबकि प्रश्न में दी गई एक अन्य दिनाँक 21 मई 1982 को ग्रेट इंडियन बस्टर्ड/गोड़ावन को अधिसूचित किया गया था।

82. Ans. 2

राज्य प्रतीक व उनके वैज्ञानिक नाम निम्नानुसार है–

♦ राज्य पक्षी (गोड़ावन) – ओर्डियोटिस नाइग्रीसैप्स/कोरियटस नाइग्रीसैटस

♦ राज्य वृक्ष (खेजड़ी) – प्रोसेपिस सिनेरिया

♦ राज्य पशु (वन्यजीव श्रेणी-चिंकारा) – गजेला बन्नेट्टी/गजेला-गजेला

♦ राज्य पशु (पशुधन श्रेणी – ऊँट) – केमेलस डोमेडेरियस

♦ राज्य पुष्प (रोहिडा का फूल) – टिकोमेला अनड्यूलेटा

83. Ans. 3

♦ चिंकारा का वैज्ञानिक नाम गजेला बन्नेट्टी है जबकि इसकी भारतीय प्रजाति को गजेला गजेला नाम दिया गया है। यह मुख्यत: पश्चिमी राजस्थान/मरु क्षेत्र में पाया जाता है तथा राज्य में चिंकारा प्रजनन केन्द्र नाहरगढ़ अभयारणय, जयपुर में है।

♦ इस प्रकार प्रश्न में दिए गए कथनों में से केवल C कथन ही सत्य है।

84. Ans. 4

♦ राज्य पक्षी गोड़ावन/ग्रेट इंडियन बस्टर्ड को 21 मई 1982 की अधिसूचना के माध्यम से राज्य पक्षी के रूप में अधिसूचित किया गया तथा इसी अधिसूचना में इसे वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के उपबंधों के अधीन पूर्णत: संरक्षित घोषित किया गया।

♦ इस प्रकार प्रश्न में दिए गए दोनों कथन सत्य है जबकि प्रश्न में असत्य कथनों का विवरण पूछा गया है। अत: विकल्प 4 (न तो A न ही B) उत्तर होगा

85. Ans. 1

♦ राज्य में स्थित 47 कृषि विज्ञान केन्द्रों में से 3 भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के संस्थानों के प्रशासनिक नियंत्रण में है इनमें से ♦ जोधपुर व पाली – काजरी के नियंत्रण में तथा बानसुर, अलवर राई-सरसों अनुसंधान निदेशालय, सेवर के प्रशासनिक नियंत्रण में हैं।

♦ जबकि प्रश्न में दिए गए अन्य विकल्प कुम्हेर, भरतपुर; खेड़ला, खुर्द, दौसा व अरणिया, श्रीमाधोपुर (सीकर) श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर के प्रशासनिक नियंत्रण में हैं।

86. Ans. 2

♦ जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया में राजस्थानी भाषा का पहला वैज्ञानिक विभाजन प्रस्तुत किया तथा राजस्थानी भाषा के लिए सर्वप्रथम राजस्थानी शब्द का प्रयोग किया।

87. Ans. 4

♦ गौड़वाड़ी बोली मुख्यतया जालौर व सिरोही के कुछ क्षेत्रों में बोली जाती है।

88. Ans. 2

♦ वागड़ी बोली वागड़ क्षेत्र (डूंगरपुर-बांसवाड़ा)में बोली जाती है।

♦ हाड़ौती बोली मुख्यतया कोटा, बारां, बूंदी तथा झालावाड़ में बोली जाती है।

♦ मालवी बोली मालवा प्रदेश से जुड़े राजस्थान के क्षेत्रों झालावाड़, कोटा व प्रतापगढ़ के कुछ भाग में बोली जाती है।

89. Ans. 1

♦ **रांगड़ी बोली** – ये बोली मालवा के राजपूतों में प्रचलित थी तथा अपनी कर्कशता के लिये जानी जाती है जो कि मालवी की एक उपबोली है।

कलाम ACADEMY

90. Ans. 2

♦ पूर्वी राजस्थानी अर्थात् ढूंढाड़ी के उपबोलियों में चौरासी, अजमेरी, किशनगढ़ी, नागरचोल, काठेड़ी, राजावाटी, सिपाड़ी आदि प्रमुख है।

91. उत्तर (2)

व्याख्या:-
- आरम्भिक, अनंतिम का समानार्थी शब्द है जबकि अनंतिम का विलोम अन्तिम होगा।
- उपर्युक्त तीनों विकल्प परस्पर विलोम हैं।

92. उत्तर (1)

व्याख्या:-
- अनुकूल का विलोम प्रतिकूल होगा।
- क्रिया का विलोम प्रतिक्रिया होगा।
- कूल का अर्थ 'किनारा' होता है।
- अनानुकूल गलत शब्द है।

93. उत्तर (4)

व्याख्या:-
- स्वजन का विलोम परजन होता है।
- अनद्यतन, पुरातन का समानार्थी शब्द है जबकि अद्यतन का विलोम पुरातन/अनद्यतन होता है।
- अल्प, थोड़ा का समानार्थी शब्द है जबकि बहु का विलोम अल्प है।
- श्लाघा, प्रशंसा का समानार्थी शब्द है जबकि निंदा का विलोम प्रशंसा/श्लाघा है।

94. उत्तर (3)

व्याख्या:-
- आकीर्ण (सिमटना)- विकीर्ण (फैलना)
- सुकीर्ण - अच्छी तरह से फैलना

95. उत्तर (3)

व्याख्या:-
- भृत्य, सेवक का समानार्थी शब्द है जबकि स्वामी का विलोम भृत्य/सेवक है।
- उपर्युक्त तीनों विकल्प परस्पर विलोम हैं।

96. उत्तर (4)

व्याख्या:-
- विदेश, परदेश का समानार्थी शब्द है जबकि स्वदेश का विलोम विदेश/परदेश होता है।
- रुग्ण, अस्वस्थ का समानार्थी शब्द है जबकि स्वस्थ का विलोम अस्वस्थ/रुग्ण होता है।
- गुरु, दीर्घ का समानार्थी शब्द है जबकि लघु/ह्रस्व का विलोम गुरु/दीर्घ होता है।
- स्वावलंबी का विलोम परावलंबी है।

97. उत्तर (1)

व्याख्या:-
- अव्यवस्था, कुव्यवस्था का समानार्थी शब्द है जबकि सुव्यवस्था का विलोम अव्यवस्था/कुव्यवस्था होता है।
- उपर्युक्त तीनों विकल्प परस्पर विलोम हैं।

98. उत्तर (2)

व्याख्या:-
- वैमनस्य (बैर)-सौमनस्य
- वर्णनीय का विलोम वर्णनातीत है।
- विकृत का विलोम अविकृत है।

99. उत्तर (4)

व्याख्या:-
- द्वेष, विराग का समानार्थी शब्द है जबकि राग का विलोम विराग/द्वेष होता है।
- कायर, डरपोक का समानार्थी शब्द है जबकि निडर का विलोम डरपोक/कायर होता है।
- ह्रास, विनाश का समानार्थी शब्द है जबकि वृद्धि/विकास का विलोम ह्रास/विनाश होता है।
- विस्तृत का विलोम संकुचित/संक्षिप्त है।

कलाम ACADEMY

100. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- पुष्ट का विलोम क्षीण/अपुष्ट है जबकि क्षीण, अपुष्ट का समानार्थी शब्द है।
- उपर्युक्त तीनों विकल्प परस्पर विलोम हैं।

101. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- प्राप्य का विलोम अप्राप्य/दुष्प्राप्य होता है।
- प्राप्त का विलोम अप्राप्त होता है।

102. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- नवीन, अर्वाचीन का समानार्थी शब्द है जबकि प्राचीन का विलोम नवीन/अर्वाचीन होता है।
- उपर्युक्त तीनों विकल्प परस्पर विलोम हैं।

103. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- Authentic – प्रामाणिक
- Authority – प्राधिकरण
- Allotment – आवंटन
- Certified – प्रमाणित

104. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- Acceptance – स्वीकृति, प्रतिग्रहण (विधि)
- Accountability – जबावदेही
- Abbreviation – संक्षेपण
- Alternate – विकल्पी

105. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- स्वायत्त – Autonomous
- सहायक – Auxiliary
- कार्यवाही – Action
- योग – Addition

106. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- Culprit – अपराधी, अभियुक्त, आरोपी

107. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- Authority – प्राधिकारी, प्राधिकार, प्राधिकरण
- Authorise – प्राधिकार देना

108. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- Boycott – बहिष्कार
- Backlog – पिछला बकाया

109. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- Context – प्रसंग, संदर्भ
- Cess – उपकर
- Chronic – जीर्ण
- Commission – आढ़त

110. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- Bare outline – रूपरेखा मात्र
- Barter – वस्तु विनिमय

कलम ACADEMY

111. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- हिंदी वर्णमाला में 11 स्वर और 33 व्यंजन हैं अर्थात् कुल 44 वर्ण हैं।

नोट : हिन्दी वर्णमाला में "ळ" अक्षर को केन्द्रीय हिन्दी समिति द्वारा विशिष्ट व्यंजन के रूप में अगस्त 2024 में शामिल किया गया था। इस संशोधन के बाद, देवनागरी हिन्दी वर्णमाला में वर्णों की संख्या 52 से बढ़कर 53 हो गई।

नोटः देवनागरी लिपि में वर्णों की संख्या 53 हो गयी है।
हिन्दी वर्णमाला में कुल वर्ण 44 है।

112. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- हिंदी वर्णमाला में निम्नलिखित 11 स्वर ध्वनियाँ प्रयुक्त होती है। यथा-अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

113. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- विजातीय स्वर या संध्यक्षर या संयुक्त स्वर – अलग-अलग प्रकार के स्वरों के मिलने से बनने वाले दीर्घ स्वर-

ए – अ/आ + इ/ई   ऐ – अ/आ + ए
ओ – अ/आ + उ/ऊ   औ – अ/आ + ओ

- सजातीय स्वर/समानाक्षर/दीर्घ स्वर – समान स्वरों के मिलने से बनने वाले दीर्घ स्वर यथा –

आ – अ + अ
ई – इ + इ
ऊ – उ + उ

114. उत्तर (1)

व्याख्याः-

- मध्य स्वरः- जब किसी स्वर का उच्चारण करने पर जीभ के बीच वाले भाग में सर्वाधिक कम्पन होता है, तब वह मध्य या केन्द्रीय स्वर कहलाता है। इस श्रेणी में केवल 'अ' स्वर को शामिल किया गया।

115. उत्तर (1)

व्याख्याः-

- ऊष्म व्यंजनः- ऊष्म का शाब्दिक अर्थ 'गर्म' अर्थात् जब किसी व्यंजन का उच्चरण करने पर श्वास वायु हल्की सी गर्म हो जाती है, तब वह ऊष्म व्यंजन कहलाता है।
- इस श्रेणी में निम्न 4 व्यंजन शामिल किये गये हैं-श् ष् स् ह्

116. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- तालव्य वर्ण- ""इचुयशानां तालु" अर्थात् 'इ/ई, च वर्ग (च छ ज झ ञ), य, श' इन सभी वर्णों का उच्चारण स्थान तालु होता है।"

117. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- ओष्ठ्य वर्ण – "उपूपध्मानीयानामौष्ठौ" (उ पू उपध्मानीयानाम् ओष्ठौ) अर्थात् 'उ/ऊ, प वर्ग (प फ ब भ म), उपध्मानीय वर्ण इन सभी वर्णों का उच्चारण स्थान ओष्ठ होता है।
- ओ-औ – ध्वनि कंठ से निकलती है और दोनों होंठ गोल हो जाते हैं, ये कंठोष्ठ्य वर्ण कहलाते हैं।

118. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- अल्पप्राण – जब किसी वर्ण का उच्चारण करने पर श्वास वायु कम मात्रा में मुख से बाहर निकलती है तो वह अल्पप्राण वर्ण कहलाता है।

जैसे- प्रत्येक वर्ग का 'विषम वर्ण (पहला/तीसरा/पाँचवाँ)+ य, र, ल, व, ड़'

119. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- घोष/सघोष वर्ण – जब किसी वर्ण का उच्चारण करने पर नाद या गूँज अधिक होती है, तो वह घोष/सघोष वर्ण कहलाता है।

जैसे- प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा व पांचवां वर्ण + य, र, ल, व + ह + अनुस्वार (अं)+सभी स्वर, ड़, ढ़।

कलाम ACADEMY

120. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- स्पर्श संघर्षी व्यंजन – च, छ, ज, झ

121. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- वृत्ताकार / वृत्तमुखी स्वर:- जब किसी स्वर का उच्चारण करने पर होठों का आकार लगभग गोल-सा हो जाता है, तब वह वृत्ताकार / वृत्तमुखी स्वर कहलाता है। इस श्रेणी में निम्नलिखित 4 स्वर शामिल किये गये हैं।

  जैसे:- उ, ऊ, ओ, औ

122. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- अग्र स्वर:- जब किसी स्वर का उच्चारण करने पर जीभ के अग्र भाग में सर्वाधिक कम्पन होता है, तब वह अग्र स्वर कहलाता है। इस श्रेणी में निम्नलिखित 4 स्वर शामिल किये जाते हैं।

  इ, ई, ए, ऐ

123. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- घोष/सघोष वर्ण – जैसे- प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा व पाँचवाँ वर्ण + य, र, ल, व + ह + अनुस्वार (अं)+सभी स्वर, ड़, ढ़।
- अल्पप्राण – जैसे- प्रत्येक वर्ग का 'विषम वर्ण (पहला/तीसरा/पाँचवाँ)+ य, र, ल, व, ड़'

124. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- दंत स्थान – दंत्य वर्ण – "लृतुलसानां दन्ता:" अर्थात् 'लृ, त वर्ग (त, थ, द, ध, न), ल, स' इन सभी वर्णों का उच्चारण स्थान दंत होता है।

125. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- संयुक्ताक्षर – जब किसी शब्द में अलग-अलग प्रकार के दो व्यंजन वर्ण एक साथ लिख दिये जाते हैं अर्थात् उनके बीच में कोई स्वर नहीं होता है। तो वहां उस व्यंजन समूह को संयुक्ताक्षर कहा जाता है।

  जैसे – कष्ट, अग्नि, स्नान, काव्य, कौशल्या, स्पष्ट, स्कूल इत्यादि।

126. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- संयुक्त व्यंजन वर्ण – हमारी देवनागरी लिपि में कुछ व्यंजन ऐसे भी प्रयुक्त होते हैं जो दो-दो व्यंजनों के योग से बनाये जाते हैं इनको संयुक्त वर्ण कहा जाता है। इनकी कुल संख्या 4 मानी जाती है। जैसे – क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।

127. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- संवृत्त स्वर:-संवृत्त का शब्दिक अर्थ 'सकरा/संकरा' अर्थात् जिस स्वर के उच्चारण में मुख सबसे कम (न के बराबर) खुलता है वह संवृत्त स्वर कहलाता है। जैसे-इ, ई, उ, ऊ

128. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण कहलाती है अर्थात् ऐसी ध्वनि जिसका अंतिम विभाजन कर दिया गया हो एवं आगे विभाजन किया जाना संभव न हो, उसे वर्ण कहते हैं। जैसे-

  अ, आ, ई, क्, च्, ट् आदि।

129. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- प्रकंपित/लुंठित व्यंजन – र
- पार्श्विक व्यंजन – ल

130 उत्तर (2)

व्याख्याः-

- 'ड़' तथा 'ढ़' वर्ण का प्रयोग शब्द के अन्त व बीच में होता है। जैसे- सड़क, कपड़ा
- जबकि 'ड़' तथा 'ढ़' वर्ण का प्रयोग शब्द के प्रारंभ में कभी नहीं होता है। जैसे- ढक्कन, डोर

131. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- जातिवाचक संज्ञा – जीभ, भूकम्प, तालाब।
- भारत, रामायण (व्यक्तिवाचक संज्ञा), नौकर (जातिवाचक संज्ञा)
- जयपुर (व्यक्तिवाचक संज्ञा), पर्वत, शिक्षक (जातिवाचक संज्ञा)
- गंगा (व्यक्तिवाचक संज्ञा), बिजली (जातिवाचक संज्ञा), उमंग (भाववाचक संज्ञा)

132. उत्तर (4)

व्याख्याः-

जातिवाचक संज्ञा + प्रत्यय = भाववाचक संज्ञा

- गुरु + अ = गौरव

विशेषण + प्रत्यय = भाववाचक संज्ञा

- सुजन + य = सौजन्य
- दक्ष + ता = दक्षता
- काला + इमा = कालिमा

133. उत्तर (3)

व्याख्याः-

जातिवाचक संज्ञा + प्रत्यय = भाववाचक संज्ञा

- लड़का + पन = लड़कपन
- लड़पन, लकड़ा, लड़कापन (कोई संज्ञा नहीं है)

134. उत्तर (3)

व्याख्याः-

- संज्ञा — विशेषण
- क्रोध — क्रोधी
- क्रुद्ध (मूल शब्द)

135. उत्तर (1)

व्याख्याः-

- संज्ञा — विशेषण
- अनुभव — अनुभवी
- घरेलू, क्षणिक, गर्म 'विशेषण' शब्द है।

136. उत्तर (3)

व्याख्याः-

- द्रव्य/पदार्थ वाचक – सोना, चाँदी।

137. उत्तर (4)

व्याख्याः-

विशेषण + प्रत्यय = भाववाचक संज्ञा

- महात्मा + य = माहात्म्य

138. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- व्यक्तिवाचक संज्ञा – अरावली, रक्षा बंधन, गोदान।
- मानव (व्यक्तिवाचक संज्ञा), दया (भाववाचक संज्ञा), मोहन (व्यक्तिवाचक संज्ञा)
- नारी (जातिवाचक संज्ञा), गीता (व्यक्तिवाचक संज्ञा), लीलण (व्यक्तिवाचक संज्ञा)
- गाय (जातिवाचक संज्ञा), मूर्खता (भाववाचक संज्ञा), पूर्व (व्यक्तिवाचक संज्ञा)

139. उत्तर (1)

व्याख्याः-

- भाववाचक संज्ञाएँ – जालिम (विशेषण)= जुल्म, दुर्बल + य = दौर्बल्य, मीठा + आस = मिठास।
- गरीबी (भाववाचक संज्ञा), भक्त, माता (जातिवाचक संज्ञा)
- सूर्य (व्यक्तिवाचक संज्ञा), होशियारी, (भाववाचक संज्ञा) दानव (जातिवाचक संज्ञा)
- शेर (जातिवाचक संज्ञा), ऊपर (अव्यय), घुमाव (भाववाचक संज्ञा)

कलाम ACADEMY

140. उत्तर (1)

व्याख्या:-
- प्रेम – भाववाचक संज्ञा

141. उत्तर (1)

व्याख्या:-
- पुरुषवाचक सर्वनाम – हम, तुम, वे, मै।

142. उत्तर (3)

व्याख्या:-
- वे सर्वनाम शब्द, जिनसे किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध नहीं होता बल्कि अनिश्चय की स्थिति बनी रहती है, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।
- अनिश्चयवाचक सर्वनाम – कोई दरवाजा खटखटा रहा है।

143. उत्तर (1)

व्याख्या:-
- वे सर्वनाम, जो प्रश्न का बोध कराते हैं या वाक्य को प्रश्नवाचक बना देते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।
- प्रश्नवाचक सर्वनाम – क्या, कौन, किसे, किसको।

144. उत्तर (4)

व्याख्या:-
- वे सर्वनाम, जो दो पृथक्-पृथक् बातों के स्पष्ट संबंध को व्यक्त करते हैं, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।
- **संबंधवाचक सर्वनाम** – जो नीचे खड़ी है, वह हमारी कक्षाध्यापिका है।

145. उत्तर (3)

व्याख्या:-
- यदि **आप** शब्द का प्रयोग (तू/तुम) के आदर रूप में प्रयुक्त होता है तथा अंग्रेजी रूपान्तरण में इसके लिए 'you' शब्द का प्रयोग किया जा सकता है, तो वहाँ यह मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम माना जाता है। जैसे – **आप** पधारकर अनुगृहीत करें।

146. उत्तर (2)

व्याख्या:-
- मुझे घर जाना है। (उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम)

147. उत्तर (2)

व्याख्या:-
- संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किया जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।

148. उत्तर (4)

व्याख्या:-
- निश्चयवाचक (संकेतवाचक) सर्वनाम – जो सर्वनाम निकट या दूर की किसी वस्तु की ओर संकेत करे, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे – इस पुस्तक को देखो, **यह** कितनी उपयोगी है।

149. उत्तर (4)

व्याख्या:-
- हिंदी में मूल सर्वनाम शब्द की संख्या ग्यारह हैं, जो निम्नानुसार है – मैं, तू (तुम), आप, यह, वह, सो, जो, कोई, कुछ, क्या, कौन।
- वे सर्वनाम, जो प्रश्न का बोध कराते हैं या वाक्य को प्रश्नवाचक बना देते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- किसे। (मूल सर्वनाम ना होकर यह सर्वनाम के छह भेदों के अन्तर्गत आता है।)

150. उत्तर (3)

व्याख्या:-
- जिन सर्वनामों का प्रयोग बोलने वाले (उत्तम पुरुष) सुनने वाले (मध्यम पुरुष) या अन्य किसी व्यक्ति के नाम के स्थान पर किया जाता है, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे – मैं, हम (उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम), आप (मध्यम पुरुष), वे (अन्य पुरुष)।

कलाम ACADEMY